आकार IAS

Shaping Your Dreams

मध्यकालीन भारत का इतिहास

प्रारंभिक परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण

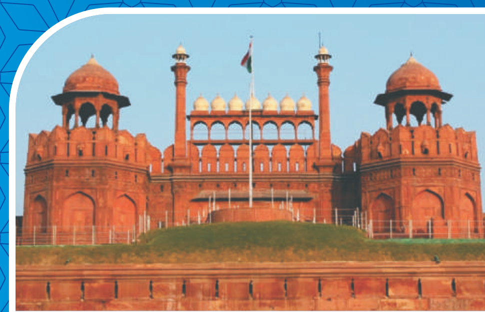

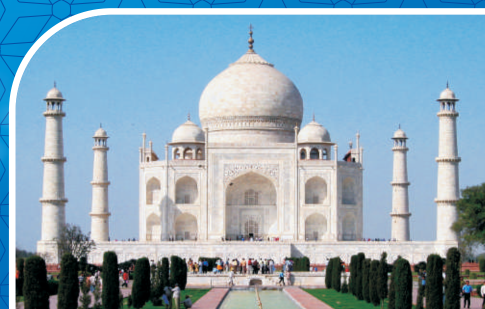

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)
mail.: aakarias2014@gmail.com, web.: www.aakarias.com
Call.: 9713300123, 6262856797, 6262856798

विषय सूची

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	इस्लाम का उदय	01 - 02
02	खलीफा	03 - 05
03	अरब आक्रमण	06 - 07
04	तुर्क आक्रमण : अलप्तगीन, सुबुक्तगीन, महमूद गजनवी, मुइजुद्दीन मुहम्मद गोरी	08 - 15
	दिल्ली सल्तनत	
05	**गुलाम वंश :** कुतुबुद्दीन ऐबक, आरामशाह, शम्सुद्दीन इल्तुतमिश, रुकनुद्दीन फिरोज, रजिया सुल्तान, मुइजुद्दीन बहरामशाह, अलाउद्दीन मसूदशाह, नासिरूद्दीन महमूद, गियासुद्दीन बलबन, कैकुबाद, शम्सुद्दीन क्यूमर्श	16 - 25
06	**खिलजी वंश :** जलालुद्दीन फिरोज खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी, शिहाबुद्दीन उमर, कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी, नासिरूद्दीन खुसरोशाह	26 - 36
07	**तुगलक वंश :** गियासुद्दीन तुगलक, मुहम्मद-बिन-तुगलक, फिरोजशाह तुगलक, नासिरूद्दीन महमूद	37 - 48
08	**सैय्यद वंश :** खिज्र खाँ, मुबारकशाह, मुहम्मदशाह, अलाउद्दीन आलमशाह	49
09	**लोदी वंश :** बहलोल लोदी, सिकन्दर लोदी, इब्राहिम लोदी	50 - 52
10	सल्तनत कालीन प्रशासन	53 - 57
11	सैन्य व्यवस्था	58
12	भू-राजस्व व्यवस्था	59 - 61
13	अर्थव्यवस्था	62 - 63
14	तकनीकी परिवर्तन	64 - 65
15	स्थापत्य कला	66 - 73
16	संगीत कला	74 - 75
17	साहित्य	76 - 79

160/4 - A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)
e-mail : aakarias2014@gmail.com ; **Website :** www.aakarias.com
CONTACT : 9713300123, 6262856797, 6262856798

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	प्रांतीय राज्य	
18	बंगाल, उड़ीसा, जौनपुर, कश्मीर, गुजरात, मालवा, मेवाड़	80 – 88
19	बहमनी राज्य	89 – 93
20	विजयनगर	94 – 101
	भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	
21	भक्ति आन्दोलन	102 – 113
22	सूफी आन्दोलन	114 – 120
	मुगल साम्राज्य	
23	जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर	121 – 126
24	नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ	127 – 129
25	शेरशाह सूरी	130 – 136
26	जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर	137 – 148
27	नुरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर	149 – 156
27	शिहाबुद्दीन मुहम्मद शाहजहाँ	157 – 161
29	आलमगीर मुहम्मद औरंगजेब	162 – 165
30	मुगल कालीन प्रशासन	166 – 170
31	मनसबदारी व्यवस्था	171 – 174
32	सैन्य व्यवस्था	175 – 176
33	भू–राजस्व व्यवस्था	177 – 179
34	अर्थव्यवस्था	180 – 183
35	धार्मिक नीति	184 – 190
36	स्थापत्य कला	191 – 198
37	चित्रकला	199 – 201
38	संगीत कला	202 – 203
39	उद्यान	203
40	शिक्षा	204
41	साहित्य	205 – 212
42	विदेशी यात्री	213 – 215

160/4 - A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)
e-mail : aakarias2014@gmail.com ; **Website :** www.aakarias.com
CONTACT : 9713300123, 6262856797, 6262856798

इस्लाम का उदय

- 'इस्लाम' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है - अल्लाह के प्रति समर्पण।
- इस्लाम के अनुयायियों को 'मुसलमान' कहा गया।
- 'मुसलमान' शब्द का अर्थ होता है - अटूट विश्वास।
- इस्लाम धर्म का उदय **मक्का** (सऊदी अरब) में हुआ था।
- इस्लाम धर्म के संस्थापक **हजरत मुहम्मद पैगम्बर** थे।
- हजरत मुहम्मद का जन्म **570 ई.** में **मक्का** में हुआ था।
- हजरत मुहम्मद का प्रारंभिक नाम अल-अमीन था, जबकि कुरान में उन्हें मुहम्मद एवं अहमद कहा गया है।
- हजरत मुहम्मद के पिता अब्दुल्ला की मृत्यु उनके जन्म से पूर्व ही हो गई थी, जबकि उनकी माता अमीना की मृत्यु तब हो गई थी, जब हजरत मुहम्मद की आयु मात्र 06 वर्ष थी।
- हजरत मुहम्मद का पालन-पोषण पहले उनके दादा **मुतल्लिब** के द्वारा, फिर उनके चाचा **अबू तालिब** के द्वारा किया गया। अबू तालिब मक्का के कुरैश कबीला के प्रमुख थे।
- हजरत मुहम्मद का सबसे महत्वपूर्ण विवाह 595 ई. में **खदीजा** नामक विधवा से हुआ था, जो ऊँटों का व्यापार करती थी। जब हजरत मुहम्मद का विवाह हुआ, तब उनकी आयु 25 वर्ष तथा खदीजा की आयु 40 वर्ष थी।
- हजरत मुहम्मद को 13 पत्नियों से 03 पुत्र एवं 04 पुत्रियां हुईं।
- हजरत मुहम्मद के सभी पुत्रों की मृत्यु उनके जीवन काल में ही हो गई थी। उनकी सबसे महत्वपूर्ण पुत्री का नाम **फातिमा** था, जो खदीजा से पैदा हुई थी। फातिमा का विवाह अबू तालिब के पुत्र हजरत अली से हुआ था, जो इस्लाम में चौथे खलीफा हुए।
- हजरत मुहम्मद को ज्ञान की प्राप्ति **610 ई.** में मक्का स्थित **हीरा** नामक गुफा में देवदूत **जिब्राईल** (जिबरील) के द्वारा हुई थी।
- हजरत मुहम्मद ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त नबी (सिद्ध पुरूष), रसूल (देवदूत) तथा पैगम्बर (अम्बर का पैगाम देने वाला) कहलाए।
- हजरत मुहम्मद ने प्रथम उपदेश अपनी पत्नी **खदीजा** को दिया था, जो उनकी प्रथम शिष्या भी थी।
- हजरत मुहम्मद को ज्ञान प्राप्त हुआ था कि अल्लाह एक एवं निराकार है। जब उन्होंने इस ज्ञान का मक्का में प्रचार-प्रसार करना शुरू किया, तो मक्का के मूर्ति पूजकों ने उन्हें जान से मारने का प्रयास किया।
- **16 जुलाई 622 ई.** में हजरत मुहम्मद अपने अनुयायियों के साथ मक्का से मदीना (यसरिब) आ गए। इसी तिथि से इस्लाम धर्म में **हिजरी संवत** का प्रारंभ हुआ।
- हजरत मुहम्मद को मदीना में कई लड़ाइयां लड़नी पड़ीं, जिनमें प्रमुख थीं - **बद्र की लड़ाई** (624 ई.), ओहद की लड़ाई (625 ई.) एवं खंदक की लड़ाई (627 ई.)।
- अन्ततः इन लड़ाइयों में हजरत मुहम्मद को सफलता मिली तथा मदीना पर उनका अधिकार हो गया।
- 630 ई. में हजरत मुहम्मद ने मक्का पर भी अधिकार कर लिया।
- **632 ई.** में हजरत मुहम्मद की मदीना में मृत्यु हो गई।

❑ कुरान

- कुरान इस्लाम धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं पवित्र ग्रंथ है।
- हजरत मुहम्मद को 610 ई. से मृत्युपर्यंत 632 ई. तक ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, जिसका ज्ञान उन्होंने अपने अनुयायियों को दिया था।
- हजरत मुहम्मद की मृत्यु के उपरान्त कुरान का प्रथम संकलन 633 ई. में किया गया, जबकि कुरान का अंतिम रूप से संकलन 653 ई. में 'जैद इब्न थाबित' के द्वारा किया गया था।
- मूलरूप से कुरान की रचना **अरबी भाषा** में हुई थी।
- कुरान में कुल **114 सुरा** (अध्याय) हैं।

❑ मुस्लिम कानून (शरीयत) के आधार

- मुस्लिम कानून (शरीयत) के निम्नलिखित 04 आधार हैं –

1) **कुरान** – हजरत मुहम्मद ने जो सुना था।
2) **हदीस** – सुनी हुई बातों का अर्थ निकाला गया।

   हजरत मुहम्मद के साथ रहने वाले अनुयायी उनके कथनों, कार्यों, तौर-तरीकों एवं आदतों को लिख लिया करते थे। ऐसे ही लेखों का संग्रह 'हदीस' है।
3) **इज्मा** – इस्लामिक विद्वानों द्वारा सामूहिक सहमति।
4) **कयास** – मिलती-जुलती बातों के आधार पर निर्णय लेना।

❑ इस्लाम के 05 स्तंभ

- इस्लाम धर्म के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त 05 माने गए हैं, जिन पर सम्पूर्ण इस्लाम धर्म आधारित है –

1) **कलमा** – अल्लाह एवं उसके रसूल में विश्वास करना।
2) **नमाज** – दिन में 05 बार की नमाज पढ़ना।
3) **जकात** – स्वेच्छा से दिया गया दान (2.5%)।
4) **रोजा** – उपवास या व्रत रखना।
5) **हज** – मक्का की यात्रा करना।

खलीफा

- 'खलीफा' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है – उत्तराधिकारी।
- इस्लाम धर्म में हजरत मुहम्मद के उत्तराधिकारी खलीफा कहलाए।

❒ राशिदुन खलीफा (632-661 ई.)

- अरबी में खलीफा-उर-राशिदुन तथा फारसी में खलीफा-ए-राशिदीन भी कहते हैं।
- अरबी भाषा में राशिदुन का मतलब 'सही मार्ग पर चलने वाला' होता है।
- प्रथम चार खलीफा कुरैश कबीला से थे, जिसमें हजरत मुहम्मद का हाशमी वंश (हाशिमी, हाशिम) भी शामिल था।
- प्रथम चार खलीफा को 'पवित्र खलीफा' भी कहते हैं, क्योंकि उन्होंने इस्लाम धर्म के सिद्धांतों के अनुसार शासन किया था।

❖ शिया-सन्नी विवाद

- हजरत मुहम्मद की मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारी को लेकर 'हजरत अबू बक्र' और 'हजरत अली' के अनुयायियों के मध्य विवाद उत्पन्न हो गया।
- 'हजरत अबू बक्र' के अनुयायियों के अनुसार योग्यता, जबकि 'हजरत अली' के अनुयायियों के अनुसार वंश के आधार पर खलीफा का चयन किया जाना चाहिए।
- 'हजरत अबू बक्र' के अनुयायी 'सुन्नी' और 'हजरत अली' के अनुयायी 'शिया' कहलाए।
- अन्ततः मदीना में हुई जनसमुदाय की बैठक में 'हजरत अबू बक्र' को हजरत मुहम्मद का उत्तराधिकारी अर्थात खलीफा चुना गया।

❖ प्रथम खलीफा : हजरत अबू बक्र (632-634 ई.)

- **राजधानी** – मदीना (सऊदी अरब)
- 'हजरत अबू बक्र' हजरत मुहम्मद की पत्नी 'आइशा' के पिता थे।
- 'हजरत अबू बक्र' के शासन काल में अरबों ने ईरान तथा सीरिया पर अधिकार कर लिया।
- 'हजरत अबू बक्र' की मृत्यु बीमारी से हुई।

❖ द्वितीय खलीफा : हजरत उमर (634-644 ई.)

- 'हजरत उमर' हजरत मुहम्मद की पत्नी 'हफसा' के पिता थे।
- 'हजरत उमर' के शासन काल में अरबों ने इराक, त्रिपोली और मिस्र पर भी अधिकार कर लिया।
- 'हजरत उमर' की हत्या किसी ईरानी द्वारा कर दी गई।

❖ तृतीय खलीफा : हजरत उस्मान/उथमान (644-656 ई.)

- ‘हजरत उस्मान’ हजरत मुहम्मद की 02 पुत्रियों ‘रुकय्या’ और ‘उम्म-ए-कुलसुम’ के पति थे।
- ‘हजरत उस्मान’ की हत्या विद्रोहियों द्वारा उनके घर में कर दी गई।

❖ चतुर्थ खलीफा : हजरत अली (656-661 ई.)

- **राजधानी** – कूफा (इराक)
- ‘हजरत अली’ हजरत मुहम्मद के चाचा ‘अबू तालिब’ के पुत्र तथा पुत्री ‘फातिमा’ के पति थे।
- ‘हजरत अली’ की हत्या कूफा की मस्जिद में नमाज के दौरान कर दी गई।

❐ उमय्यद वंश के खलीफा (661-750 ई.)

- **राजधानी** – दमिश्क (सीरिया)
- **प्रथम खलीफा** – मुआविया
- ‘मुआविया’ हजरत उस्मान का भतीजा तथा सीरिया का सूबेदार था।
- यद्यपि हजरत अली की मृत्यु के पश्चात उनका पुत्र ‘हसन’ नया खलीफा बना था, किन्तु मुआविया ने हसन का विरोध किया था। अन्ततः युद्ध की संभावना को टालने हेतु हसन ने मुआविया के पक्ष में गद्दी त्याग दी थी। आगे मुआविया ने हसन की पत्नी के माध्यम से जहर दिलवाकर हसन की हत्या करवा दी थी।
- मुआविया की मृत्यु के पश्चात नया खलीफा उसका पुत्र ‘याजिद’ (यजीद) बना।
- याजिद ने हजरत अली के पुत्र ‘हुसैन’ पर दबाब बनाया कि हुसैन नए खलीफा यादिज की सत्ता स्वीकार कर ले। किन्तु जब हुसैन ने यादिज को नया खलीफा मानने से इन्कार कर दिया तो यादिज ने 680 ई. में इराक स्थित ‘**कर्बला के युद्ध**’ में हुसैन को पराजित कर 72 अनुयायियों सहित हत्या कर दी।
- शिया मुसलमान हुसैन और उसके 72 अनुयायी की मृत्यु के शोक में ‘मुहर्रम’ का त्यौहार मनाते हैं और ‘ताजिया’ निकालते हैं।
- **अंतिम खलीफा** – मरवान द्वितीय

❐ अब्बासी वंश के खलीफा (750-1517 ई.)

- **राजधानी** – बगदाद (इराक)
- **प्रथम खलीफा** – अबुल अब्बास
- अब्बासी वंश का अंतिम महत्वपूर्ण खलीफा अल मुस्तसिम हुआ, जिसकी हत्या 1258 ई. में मंगोल शासक चंगेज खान के पोते हलाकू खान के द्वारा कर दी गई।
- अब्बासी वंश के खलीफाओं की एक शाखा ने 1261 ई. से 1517 ई. तक मिस्र के कैरो (काहिरा) से शासन किया।
- **अंतिम खलीफा** – मुहम्मद

❐ ऑटोमन वंश या उस्मानी वंश के खलीफा (1517–1924 ई.)

- **राजधानी** – काहिरा (मिस्र)
- **प्रथम खलीफा** – सलीम प्रथम
- प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात मित्र राष्ट्रों ने तुर्की से अगस्त 1920 ई. में 'सेव्रेस (सेवर्स) की संधि' की थी, जिसके अनुसार खलीफा के पद को समाप्त कर दिया गया था। किन्तु तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा (अता तुर्क) के नेतृत्व में युवा तुर्कों ने आंदोलन कर 'सेव्रेस की संधि' की शर्तों को मनाने से इन्कार कर दिया था। फिर मित्र राष्ट्रों ने तुर्की के साथ जुलाई 1923 ई. में एक नई 'लुसाने (लोजान) की संधि' की थी, जिसके अनुसार तुर्की को उसके कुछ प्रदेश वापस लौटा दिए गए थे।
- इस बीच तुर्की में हुए युवा तुर्क आंदोलन के परिणामस्वरूप वहां मुस्तफा कमाल पाशा को नया राष्ट्रपति बनाया गया।
- **03 मार्च 1924 ई.** में मुस्तफा कमाल पाशा की सरकार ने अंतिम रूप से खलीफा के पद को समाप्त कर दिया।
- **अंतिम खलीफा** – अब्दुल मजीद द्वितीय

अरब आक्रमण

- भारत में सर्वप्रथम मुस्लिम आक्रमण अरबों के द्वारा किया गया।
- अरबों ने सर्वप्रथम 636-37 ई. में खलीफा उमर के काल में मुम्बई के निकट थाना पर तथा 644 ई. में खलीफा उस्मान के काल में अब्दुला-बिन-उमर के नेतृत्व में पश्चिमी सिन्ध पर असफल आक्रमण किया था।
- अरबों ने भारत पर प्रथम सफल आक्रमण **712 ई.** में **मुहम्मद-बिन-कासिम** के नेतृत्व में सिन्ध के शासक **दाहिर** के विरूद्ध किया था।
- सिन्ध में 8वीं सदी में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना ब्राह्मण वंश के राजा **चाच** के द्वारा की गई थी।
- चाच का उत्तराधिकारी उसका पुत्र **दाहिर** हुआ था।
- 712 ई. में सिन्ध पर हुए अरब आक्रमण की जानकारी **काजी इस्माइल** या **अली अहमद** के द्वारा अरबी भाषा में लिखे गए ग्रंथ **चचनामा** से प्राप्त होती है।
- चचनामा का फारसी भाषा में अनुवाद सिन्ध के शासक कुबाचा के समय **अबू बक्र कुफी** के द्वारा **फतहनामा** नाम से किया गया था।
- सिन्ध पर हुए इस अरब आक्रमण का मूल उद्देश्य धन-दौलत लूटना तथा इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना था, किन्तु तात्कालिक कारण इराक के शासक हज्जाज के समुद्री जहाज, जो श्रीलंका से इराक वापस आ रहा था, को सिन्ध स्थित देवल में समुद्री लुटेरों द्वारा लूट लिया जाना था।
- हज्जाज ने खलीफा अल वालिद (अल वलीद) की अनुमति से क्रमशः उबेदुल्ला एवं बुदैल के नेतृत्व में सिंध सेना भेजी, किन्तु ये दोनों पराजित हुए।
- अंततः हज्जाज ने अपने दामाद एवं गुलाम मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में सेना भेजी।
- मुहम्मद-बिन-कासिम ने 712 ई. में सर्वप्रथम सिन्ध स्थित देवल एवं उसके पश्चात् क्रमशः नीरून व सेहवान पर अधिकार स्थापित किया।
- नीरून में रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं ने शांति को महत्व देते हुए बिना युद्ध किए ही अरबों की अधीनता स्वीकार कर ली थी।
- 20 जून 712 ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम ने **रावर के युद्ध** में दाहिर को पराजित कर मार डाला। यहां दाहिर की पत्नी रानाबाई ने जौहर कर लिया।
- फिर मुहम्मद-बिन-कासिम ने ब्राह्मणाबाद पर आक्रमण कर दाहिर के पुत्र जयसिंह को पराजित किया। आगे चलकर जयसिंह ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।
- इसके उपरान्त मुहम्मद-बिन-कासिम ने सिन्ध की राजधानी **अरोर** पर अधिकार स्थापित किया, जो अरबों की सिन्ध में अंतिम विजय थी।
- मुहम्मद-बिन-कासिम ने 713 ई. में मुल्तान (स्वर्ण नगरी) पर अधिकार स्थापित किया, जो अरबों की भारत में अंतिम विजय थी।

- अरबों ने सिन्ध एवं मुल्तान पर 871 ई. तक शासन किया था। इस दौरान अरबों ने सिन्ध में **मंसूरा** को राजधानी बनाई थी।
- अरब भारत के अन्य क्षेत्रों पर अधिकार स्थापित नहीं कर सके। अरब आक्रमणकारियों ने जब भारत के अंदरूनी क्षेत्रों में प्रवेश करने का प्रयास किया, तो उन्हें कश्मीर के कार्कोट वंश के शासक ललितादित्य, कन्नौज के प्रतिहार वंश के शासक नागभट्ट प्रथम तथा बादामी के चालुक्य वंश के शासक पुलकेशिन द्वितीय ने पराजित किया।
- अरब आक्रमण का भारत पर कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा, किन्तु अरब आक्रमण के परिणामस्वरूप भारत में इस्लाम धर्म का आगमन हुआ।
- अरबों ने ही भारतीयों के संदर्भ में **हिन्दू** शब्द का प्रयोग किया था।
- अरबों ने ही भारत में ऊँट-पालन एवं खजूर की खेती प्रारंभ की थी।
- सर्वप्रथम मुहम्मद-बिन-कासिम ने भारत में सिन्ध स्थित देवल के हिन्दुओं पर **जजिया कर** लगाया था।
- अरबों को भारत से कई लाभ हुए। उन्हें न केवल भारत से धन-दौलत प्राप्त हुई, बल्कि अरब आक्रमणकारी अपने साथ भारतीय गणित एवं ज्योतिषी की पुस्तकें भी ले गए थे, जिनका अरब में अरबी भाषा में अनुवाद किया गया। इससे अरबों को भारतीय ज्ञान प्राप्त हुआ।
- खलीफा मंसूर के समय ब्रह्मगुप्त के दो ग्रंथ **ब्रह्मस्फुटसिद्धांत** (गणित पर) एवं **खण्डखाद्यक** (ज्योतिषी एवं खगोलशास्त्र पर) का अरब में अरबी भाषा में अनुवाद **अलफजारी** के द्वारा किया गया।

मुहम्मद-बिन-कासिम

- मुहम्मद-बिन-कासिम की मृत्यु शीघ्र ही 715 ई. में हो गई थी।
- चचनामा के अनुसार मुहम्मद-बिन-कासिम ने ब्राह्मणाबाद पर अधिकार करने के पश्चात् वहां से प्राप्त दाहिर की दूसरी विधवा रानी लाड़ी तथा उसकी दो पुत्रियों सूर्य देवी एवं परिमल देवी को खलीफा सुलेमान के पास भेज दिया था।
- खलीफा के पास पहुँचकर उन दोनों ने खलीफा से शिकायत की कि मुहम्मद-बिन-कासिम ने उनके सतीत्व को भंग करके उन्हें यहाँ भेजा है।
- खलीफा सुलेमान ने क्रोधित होकर आदेश दिया कि मुहम्मद-बिन-कासिम को बैल की खाल में बंद करके उसके पास भेजा जाए।
- मुहम्मद-बिन-कासिम ने उस आदेश का पालन किया और स्वयं को बैल की खाल में बंद कर लिया, जिससे उसका जीवन समाप्त हो गया।
- जब मुहम्मद-बिन-कासिम की लाश खलीफा के सामने प्रस्तुत की गई, तो राजकुमारियों ने कहा कि मुहम्मद-बिन-कासिम निर्दोष था। हमने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए उस पर यह आरोप लगाया था।
- इससे क्रोधित होकर खलीफा ने दोनों राजकुमारियों को घोड़े की पूंछ से बंधवाकर घोड़ों को उस समय तक दौड़ाया, जब तक दोनों की मृत्यु नहीं हो गई।

तुर्क आक्रमण

- तुर्क मूलरूप से ईरानी थे, जो अरब आक्रमण के समय तुर्कमेनिस्तान भाग आए थे।

❑ अलप्तगीन (962-963 ई.)

- तुर्क सरदार **अलप्तगीन** ने 962 ई. में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की एवं गजनी (अफगानिस्तान) में अपनी राजधानी स्थापित की।
- अलप्तगीन के पश्चात् क्रमश: इस्हाक, बलक्तगीन, पीराई तथा सुबुक्तगीन शासक हुए।

❑ सुबुक्तगीन (977-997 ई.)

- 977 ई. में सुबुक्तगीन शासक बना, जो अलप्तगीन का गुलाम एवं दामाद था।
- सुबुक्तगीन **यमीनी वंश** (यामिनी वंश) का तुर्क था। आगे चलकर 'यमीनी वंश' को 'गजनवी वंश' के नाम से भी जाना गया।
- हिन्दुशाही वंश के शासक जयपाल ने सुबुक्तगीन के विरुद्ध दिल्ली, अजमेर, कन्नौज आदि स्थानों के हिन्दू राजाओं का एक संघ बनाया तथा सुबुक्तगीन के राज्य पर आक्रमण किया। किन्तु भयंकर झंझावत आने के कारण जयपाल की पराजय हुई और उसे विवश होकर संधि करनी पड़ी।
- जब जयपाल ने संधि के अनुसार युद्ध हर्जाना नहीं दिया, तो सुबुक्तगीन ने 986-87 ई. में भारत की सीमा पर आक्रमण कर कुछ किलों और नगरों पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम तुर्क सुबुक्तगीन था।
- 997 ई. में सुबुक्तगीन की मृत्यु हो गई और गजनी व हिन्दूशाही राज्य के मध्य प्रारंभ हुए संघर्ष का कोई निश्चित परिणाम निकलकर सामने नहीं आया।
- सुबुक्तगीन ने मृत्यु से पूर्व अपने छोटे पुत्र **इस्माइल** को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था, किन्तु शीघ्र ही 998 ई. में सुबुक्तगीन के बड़े पुत्र महमूद गजनवी ने इस्माइल की हत्या कर राजगद्दी प्राप्त कर ली।

❑ महमूद गजनवी (998-1030 ई.)

- महमूद गजनवी का जन्म 971 ई. में **गजनी** में हुआ था।
- महमूद गजनवी की माँ जबुलिस्तान (अफगानिस्तान) की थी, इसीलिए महमूद गजनवी को **जबुली का महमूद** भी कहा जाता था।
- महमूद गजनवी ने मध्य-एशिया में एक विस्तृत साम्राज्य का निर्माण किया था तथा खलीफा से गजनी में शासन करने हेतु सनद प्राप्त की थी।
- इससे खुश होकर खलीफा **अल कादिर बिल्लाह** ने महमूद गजनवी को **यमीन-उद-दौला** (साम्राज्य की दाहिनी भुजा) तथा **अमीन-उल-मिल्लत** (मुसलमानों का संरक्षक) की उपाधि प्रदान की थी।

- माना जाता है इसी मौके पर महमूद गजनवी ने खलीफा से वादा किया था कि वह जब तक जीवित रहेगा काफिरों के देश में आक्रमण करेगा।
- कुछ इतिहासकारों के अनुसार महमूद गजनवी ने भारत पर 12 आक्रमण किए थे, किन्तु **सर हैनरी इलियट** के अनुसार महमूद गजनवी ने भारत पर 17 आक्रमण किए थे। अधिकांश विद्वानों ने महमूद गजनवी द्वारा भारत में किए गए आक्रमणों की संख्या 17 स्वीकार की है।
- **पहला आक्रमण** – 1000 ई. में महमूद गजनवी हिन्दूशाही राज्य के सीमावर्ती क्षेत्र पर स्थित कुछ दुर्गों को जीतकर गजनी लौट गया।
- **दूसरा आक्रमण** – 1001 ई. में महमूद गजनवी ने हिन्दूशाही वंश के शासक जयपाल को पेशावर के नजदीक पराजित कर पेशावर और वैहिन्द पर अधिकार कर लिया। जयपाल अपने संबंधियों सहित बंदी बना लिया गया। हालांकि जयपाल ने महमूद गजनवी को 25 हाथी और 2,50,000 दीनार देकर मुक्ति पाई, लेकिन अपनी निरंतर पराजय से अपमानित महसूस करते हुए जयपाल ने आत्मदाह कर लिया।
- **तीसरा आक्रमण** – 1004 ई. में महमूद गजनवी ने भेरा या भीरा (पंजाब, पाकिस्तान) के राजा बीजीराय या वाजिरा को पराजित किया। बीजीराय ने आत्महत्या कर ली।

हिन्दूशाही राज्य

- हिन्दूशाही राज्य का विस्तार चिनाब नदी से लेकर हिन्दूकुश पर्वतमाला तक था।
- हिन्दूशाही राज्य अफगानिस्तान के काबुल व लगमान, पाकिस्तान के पेशावर और भारत के कश्मीर व पंजाब प्रांत तक विस्तृत था।
- हिन्दूशाही राज्य की राजधानी पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित **वैहिन्द** थी, जिसे ओहिन्द और उदभाण्ड के नाम से भी जाना जाता था।
- इस राज्य की स्थापना एक ब्राह्मण मंत्री **कल्लार** के द्वारा की गई थी।
- कल्लार का उत्तराधिकारी **जयपाल** हुआ, जिसने महमूद गजनवी से पराजित होने के उपरान्त आत्महत्या कर ली थी।
- जयपाल के उत्तराधिकारी क्रमशः **आनंदपाल**, **त्रिलोचनपाल** तथा **भीमपाल** हुए। ये सभी महमूद गजनवी से पराजित हुए थे।
- महमूद गजनवी के आक्रमणों का निरंतर सामना करते-करते हिन्दूशाही राज्य की स्थिति कमजोर हो गई और 1026 ई. में हिन्दूशाही राज्य का अंत हो गया।

- **चौथा आक्रमण** – 1005 ई. में महमूद गजनवी ने मुल्तान के शिया मुस्लिम शासक अब्दुल फतह दाऊद को तथा हिन्दूशाही वंश के शासक आनंदपाल को पराजित किया।

  महमूद गजनवी मुल्तान तथा भेरा का शासन आनंदपाल के पुत्र सुखपाल को सौंपकर गजनी वापस चला गया। सुखपाल ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था तथा इसे 'नौशाशाह' (नवासाशाह) कहा जाने लगा था।
- **पाँचवाँ आक्रमण** – 1007 ई. में महमूद गजनवी ने पुनः मुल्तान पर आक्रमण कर सुखपाल को बंदी बना लिया, क्योंकि सुखपाल ने पुनः हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया था तथा स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया था।
- **छठवाँ आक्रमण** – 1008 ई. में महमूद गजनवी ने एक बार पुनः आनंदपाल पर आक्रमण किया। इस बार आनंदपाल ने दिल्ली, अजमेर, कन्नौज, कालिंजर, ग्वालियर और उज्जैन के हिन्दू राजाओं का संघ भी बनाया था, किन्तु आनंदपाल की पराजय हुई। महमूद गजनवी ने आनंदपाल की नई राजधानी नंदनपुर या नंदशाह में लूटमार की।

  इसी अभियान के दौरान 1009 ई. में महमूद गजनवी ने **नगरकोट** (कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश) पर भी आक्रमण कर लूटमार की।
- **सातवाँ आक्रमण** – 1009 ई. में महमूद गजनवी ने **नारायणपुर** (अलवर, राजस्थान) पर आक्रमण कर लूटमार की।

- **आठवाँ आक्रमण** – 1010 ई. में महमूद गजनवी ने पुन: मुल्तान पर आक्रमण कर अब्दुल फतह दाऊद को पराजित कर मुल्तान को अपने अधीन कर लिया।
- **नवमाँ आक्रमण** – 1014 ई. में महमूद गजनवी ने हरियाणा के **थानेश्वर** पर आक्रमण कर 'चक्रस्वामी मंदिर' को लूटा। महमूद गजनवी 'चक्रस्वामी मंदिर' से भगवान विष्णु की मूर्ति को गजनी ले गया और गजनी के मुख्य चौक के रास्ते में डलवा दिया ताकि उसे मुसलमानों के पैरों तले रौंदा जाये।
- **दसवाँ आक्रमण** – 1014 ई. में महमूद गजनवी ने हिन्दूशाही राज्य की नई राजधानी नंदनपुर या नंदशाह पर आक्रमण कर लूटमार की। त्रिलोचनपाल ने भागकर कश्मीर में शरण ली।
- **ग्यारहवाँ आक्रमण** – 1015 ई. में महमूद गजनवी ने हिन्दूशाही वंश के शासक त्रिलोचनपाल के पुत्र भीमपाल को पराजित किया, किन्तु महमूद गजनवी कश्मीर को नहीं जीत सका।
- **बारहवाँ आक्रमण** – 1018 ई. में महमूद गजनवी ने 'मंदिरों की नगरी' नाम से प्रसिद्ध **मथुरा** पर आक्रमण कर लूटमार की।
- **तेरहवाँ आक्रमण** – 1018 ई. में महमूद गजनवी ने **वृंदावन** के मंदिरों और **कन्नौज** पर आक्रमण कर लूटमार की। कन्नौज का शासक **राज्यपाल** बिना युद्ध किए ही भाग गया।

  महमूद गजनवी के वापस जाने के उपरांत कालिंजर के चंदेल वंशीय राजा विद्याधर ने ग्वालियर के राजा के सहयोग से राज्यपाल पर आक्रमण कर उसे मौत के घाट उतार दिया। उसकी दृष्टि में राज्यपाल ने मथुरा और वृन्दावन जैसे तीर्थस्थानों को लूटने वाले महमूद से बिना युद्ध किए हुए भागकर एक बड़ा अपराध किया था।
- **चौदहवाँ आक्रमण** – 1019 ई. में महमूद गजनवी ने हिन्दूशाही वंश के शासक त्रिलोचनपाल को पराजित किया। इसी वर्ष महमूद गजनवी ने प्रतिहार वंश की नई राजधानी 'बारी' पर आक्रमण कर लूटमार की। प्रतिहार वंशीय त्रिलोचनपाल (राज्यपाल का पुत्र) बिना युद्ध किए ही भाग गया।

  आगे बढ़कर **1020 ई.** में महमूद गजनवी ने कालिंजर के चंदेल वंश के शासक **विद्याधर** पर आक्रमण किया। यद्यपि चंदेलों की सैन्य शक्ति से महमूद गजनवी भयभीत हुआ था, किन्तु एकाएक विद्याधर रात्रि को पलायन कर गया। अत: महमूद गजनवी कालिंजर में कुछ लूटमार कर वापस लौट गया।
- **पंद्रहवाँ आक्रमण** – 1021 ई. में महमूद गजनवी ने पंजाब पर आक्रमण कर वहां अपना शासन स्थापित किया।

  पंजाब में महमूद गजनवी ने चाँदी के ऐसे सिक्के जारी किए थे, जिन पर **घुड़सवार** व **नंदी** की आकृति उत्कीर्ण थी और संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपि में **अव्यक्तमेकं अवतार महमूद** अंकित था। इस प्रकार भारत में मुस्लिम शासकों में सर्वप्रथम महमूद गजनवी ने ही भारतीय ढंग के सिक्के तथा संस्कृत लेख युक्त सिक्के जारी किए थे। ऐसे सिक्के **दिल्लीवाला** या **देहलीवाला** नाम से प्रसिद्ध थे।

  इसी अभियान के दौरान **1021-22 ई.** में महमूद गजनवी ने **ग्वालियर** पर आक्रमण कर वहाँ के शासक कीर्तिराज को आत्मसमर्पण हेतु बाध्य किया। तत्पश्चात् उसने चन्देल वंश के शासक **विद्याधर** के दुर्ग कलिंजर पर आक्रमण किया, किन्तु महमूद गजनवी विद्याधर को पराजित नहीं कर सका। अन्तत: विद्याधर ने महमूद गजनवी से सन्धि कर ली, जिसके अनुसार महमूद गजनवी को 15 दुर्ग और अत्यधिक धन-संपत्ति प्राप्त हुई। इस प्रकार भारत का एकमात्र राजपूत शासक विद्याधर था, जो महमूद गजनवी से पराजित नहीं हुआ था।

- **सोलहवाँ आक्रमण** – 1024 ई. में महमूद गजनवी ने गजनी से गुजरात की ओर प्रस्थान किया। 1025 ई. में महमूद गजनवी ने गुजरात की राजधानी **अन्हिलवाड़ा** पर आक्रमण किया। इस समय यहाँ चालुक्य या सोलंकी वंशीय शासक **भीमदेव प्रथम** का शासन था। भीमदेव प्रथम बिना युद्ध किए भाग गया।

  1025 ई. में ही महमूद गजनवी ने गुजरात के काठियावाड़ स्थित **सोमनाथ** के मंदिर पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया। सोमनाथ के शिवलिंग के टूटे हुए टुकड़ों को गजनी की जामा मस्जिद की सीढ़ियों में लगा दिया गया। धन की दृष्टि से यह सर्वाधिक सफल अभियान था।
- **सत्रहवाँ आक्रमण** – 1027 ई. में महमूद गजनवी ने भारत में अंतिम आक्रमण सिन्ध के जाटों के विरूद्ध किया। जब महमूद गजनवी सोमनाथ को लूटकर गजनी वापस जा रहा था, तब सिन्ध के जाटों ने उसे तंग किया था। जाटों को दंडित करने के लिए महमूद गजनवी ने उनके राज्य पर आक्रमण कर लूटमार की।
- 1030 ई. में क्षय रोग की वजह से महमूद गजनवी की मृत्यु हो गई।
- महमूद गजनवी के द्वारा भारत पर किए गए आक्रमण के परिणामस्वरूप तुर्कों को न केवल भारत से अत्यधिक धन-दौलत प्राप्त हुई, बल्कि **अफगानिस्तान**, **मुल्तान** और **पंजाब** के प्रदेशों में गजनवी वंश का राज्य भी स्थापित हो गया।
- महमूद गजनवी को आजम का **प्रथम सुल्तान** माना जाता है। तारीख-ए-गुजीदा के अनुसार महमूद गजनवी ने सीस्तान के शासक खलफ-बिन-अहमद को पराजित करने के उपरांत सुल्तान की उपाधि धारण की थी।
- महमूद गजनवी ने **गाजी** (विधर्मियों का कत्ल करने वाला) तथा **बुतशिकन** (मूर्ति भंजक) की उपाधि धारण की थी।
- महमूद गजनवी ने गजनी के दरबार में कई विद्वानों को संरक्षण दिया था।
- **किताब-उल-यमीनी** (तारीख-ए-यमीनी) का रचियता **उत्बी** महमूद गजनवी का दरबारी इतिहासकार था।
- **किताब-उल-हिन्द** या **तारीख-ए-हिन्द** या **तहकीक-ए-हिन्द** का रचियता **अलबरूनी** भी महमूद गजनवी का दरबारी था। अलबरूनी महमूद गजनवी के आक्रमण के दौरान ही भारत आकर बस गया था।
- **शाहनामा** का रचियता **फिरदौसी** भी महमूद गजनवी का समकालीन था।
- शाहनामा को **अफगानिस्तान का महाभारत** तथा फिरदौसी को **पूर्व का होमर** कहा जाता है।
- होमर यूनान के एक प्रसिद्ध कवि थे, जिनका काल 9वीं से 10वीं सदी ई. पू. के मध्य था। होमर ने दो महत्वपूर्ण महाकाव्य लिखे थे, प्रथम- इलियड और द्वितीय- ओडिसी। इलियट में ट्रॉय एवं यूनान के मध्य हुए युद्ध तथा ट्रॉय के योद्धा एकलीज की वीरता की कहानी मिलती है।
- **तारीख-ए-सुबुक्तगीन** का रचियता **बैहाकी** (पूर्वी पेप्स-लेनपूल), खुरासान का विद्वान तुसी, फारस का कवि उजारी, महान शिक्षक उन्सुरी, दर्शनशास्त्र का विद्वान फराबी, अस्जदी, फर्रूखी आदि महमूद गजनवी के प्रमुख दरबारी विद्वान थे।
- महमूद गजनवी ने गजनी में विश्वविद्यालय, पुस्तकालय, अजायबघर एवं जामा मस्जिद का निर्माण करवाया था। उसने नवार नदी पर बाढ़-ए-सुल्तान नामक बांध भी बनवाया था।

❑ पृष्ठभूमि

1030 ई. में महमूद गजनवी की मृत्यु के पश्चात् उसके द्वारा स्थापित वृहद साम्राज्य का विभाजन हो गया। गजनी प्रदेश पर तो यमीनी वंश या गजनवी वंश का ही शासन रहा, परन्तु गोर प्रदेश पर तुर्कों की गुंज शाखा (शंसवनी वंश) का अधिकार हो गया। जब गोर का शासक **अलाउद्दीन** हुआ, तो उसने गजनी को 07 दिनों तक जलाया, जिसके कारण उसे 'जहाँसोज' कहा गया।

1163 ई. में अलाउद्दीन का चचेरा भाई **गियासुद्दीन** गोर का शासक बना। 1173 ई. में गियासुद्दीन ने गजनी प्रदेश पर भी अधिकार कर लिया, किन्तु गियासुद्दीन ने तुर्की जनजातीय परंपरा का पालन करते हुए अपने छोटे भाई मुइजुद्दीन मुहम्मद गोरी को गजनी प्रदेश का शासक नियुक्त किया।

मुइजुद्दीन मुहम्मद गोरी (1192-1206 ई.)

- मुहम्मद गोरी का मूल नाम **शिहाबुद्दीन** था।
- मुहम्मद गोरी ने अपनी सारी शक्ति भारतीय क्षेत्र की तरफ प्रसार में लगाई, जबकि गियासुद्दीन का ध्यान पश्चिम एवं मध्य एशिया की तरफ ही केन्द्रित रहा।
- मुहम्मद गोरी ने सर्वप्रथम **1175 ई.** में करमातियों से **मुल्तान** जीता। उसके पश्चात् उसने बोलन और खेबर दर्रे से पंजाब के रास्ते भारत में प्रवेश करने की जगह गोमल दर्रे से होते हुए गुजरात के रास्ते आगे बढ़ने का निर्णय लिया। तत्पश्चात् उसने उच्छ तथा निचले सिंध को भी जीत लिया।
- 1178-79 ई. में मुहम्मद गोरी ने गुजरात के नेहरवाला पर चढ़ाई की, परन्तु वह आबु पर्वत के निकट **काशह्द के युद्ध** में गुजरात के चालुक्य वंशीय शासक **भीमदेव द्वितीय** (मूलराज द्वितीय) की सेना, जिसका नेतृत्व उसकी माँ **नायिका देवी** कर रही थी, से पराजित हुआ। यह भारत में मुहम्मद गोरी की प्रथम पराजय थी।
- इसके पश्चात् मुहम्मद गोरी को अपनी गलती का अहसास हुआ तथा उसने पंजाब के रास्ते भारत में अभियान करने का निर्णय लिया।
- इस समय लाहौर एवं पंजाब में गजनवी वंश के अंतिम शासक **मलिक खुसरव** का अधिकार था।
- 1186 ई. तक मुहम्मद गोरी ने जम्मू के शासक **विजयदेव** के सहयोग से लाहौर एवं पंजाब पर आक्रमण कर मलिक खुसरव को कैद कर लिया। इस प्रकार संपूर्ण लाहौर एवं पंजाब पर मुहम्मद गोरी का अधिकार हो गया और गजनवी का राजवंश समाप्त हो गया।
- 1189 ई. में जब मुहम्मद गोरी ने सीमावर्ती किले **भटिण्डा** पर आक्रमण करके उसे जीत लिया, तो अजमेर तथा दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध अनिवार्य हो गया।
- पृथ्वीराज चौहान एक प्रतापी शासक थे। उन्होंने चंदेल वंश के शासक **परमार्दिदेव** पर आक्रमण कर पराजित किया था। इनके मध्य हुए युद्ध में चंदेलों के सेनानायक **आल्हा** और **ऊदल** नामक दो भाई मारे गए थे।
- पृथ्वीराज चौहान का विवाद कन्नौज के गहड़वाल या राठौर वंश के शासक **जयचंद** से भी था। पृथ्वीराज ने उसकी पुत्री **संयोगिता** का अपहरण कर लिया था।
- पृथ्वीराज चौहान ने गुजरात पर भी आक्रमण किया था, परन्तु वह भीमदेव द्वितीय से पराजित हुआ था।

❐ तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

- पंजाब एवं लाहौर को जीतने के पश्चात् मुहम्मद गोरी के राज्य की सीमाएं दिल्ली और अजमेर के चौहान वंशीय शासक पृथ्वीराज चौहान के राज्य की सीमाओं से मिलने लगी, जिससे दोनों के मध्य युद्ध अनिवार्य हो गया। दोनों के मध्य आधुनिक हरियाणा स्थित तराइन के मैदान में युद्ध हुआ, जिसे इतिहास में तराइन के प्रथम युद्ध के नाम से जाना जाता है।
- तराइन के प्रथम युद्ध का मुख्य कारण 1189 ई. में मुहम्मद गोरी द्वारा तबरहिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार कर लेना था।
- पृथ्वीराज चौहान एवं मुहम्मद गोरी के मध्य हुए इस युद्ध में मुहम्मद गोरी की पराजय हुई तथा वह पंजाब की ओर लौट गया।

पृथ्वीराज चौहान (रायपिथौरा)

- पृथ्वीराज चौहान का मूल नाम पृथ्वीराज तृतीय था।
- पृथ्वीराज चौहान के पिता सोमेश्वर चौहान एवं माता कर्पूरदेवी थीं।
- सोमेश्वर चौहान की अन्य पत्नी कमलादेवी दिल्ली के शासक अनंगपाल तोमर (बिलानदेव) की पुत्री थी।
- दिल्ली (ढ़िल्लिका) की स्थापना करने वाले **अनंगपाल तोमर** पृथ्वीराज चौहान के नाना थे।
- अनंगपाल तोमर का कोई पुत्र नहीं था, इसलिए अपनी मृत्यु से पूर्व ही अनंगपाल तोमर ने पृथ्वीराज चौहान को दिल्ली का युवराज घोषित कर दिया था।
- 1166 ई. में अनंगपाल तोमर की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली का क्षेत्र अजमेर के अधीन हो गया तथा 1178 ई. में सोमेश्वर चौहान की मृत्यु के पश्चात् इन दोनों क्षेत्रों पर पृथ्वीराज चौहान का अधिकार हो गया था।

❐ तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

- एक वर्ष के पश्चात् मुहम्मद गोरी ने 1 लाख 20 हजार अश्वारोही सेना के साथ पुन: भारत पर आक्रमण कर तराइन की दूसरी लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया।
- पृथ्वीराज चौहान के अंतिम जीवन के विषय में मतभेद है।

  मिन्हाज-उस-सिराज के अनुसार पृथ्वीराज चौहान की तत्काल हत्या कर दी गई थी।

  पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चंद्रवरदाई (पुस्तक-पृथ्वीराजरासो) के अनुसार पृथ्वीराज चौहान को गजनी ले जाया गया, जहाँ पृथ्वीराज चौहान ने शब्द भेदी बाण चलाकर मुहम्मद गोरी की हत्या कर दी थी। इसके उपरान्त मुहम्मद गोरी के सैनिकों ने पृथ्वीराज चौहान एवं चन्द्रवरदाई की हत्या कर दी थी।

  हसन निजामी का विचार अधिक सत्य प्रतीत होता है, जिसके अनुसार पृथ्वीराज चौहान को अजमेर ले जाया गया, जहाँ उसने मुहम्मद गोरी के अधीनस्थ शासक के रूप में कुछ दिनों तक शासन किया, परन्तु आगे विद्रोह करने पर उसकी हत्या कर दी गई। इस मत की पुष्टि मुद्रा विषयत प्रमाण से भी होती है।
- भारत में मुहम्मद गोरी के कुछ ऐसे सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिनके एक तरफ **नन्दी की आकृति** तथा देवनागरी लिपि में **पृथ्वीराज** लिखा है, जबकि दूसरी तरफ **घोड़े की आकृति** तथा **मुहम्मद बिन साम** उत्कीर्ण है।
- 1192 ई. में मुहम्मद गोरी ने भारतीय क्षेत्र का प्रशासक कुतुबुद्दीन ऐबक को बनाकर स्वयं गजनी लौट गया।
- 1192-94 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने बरन, मेरठ, रणथम्भौर, दिल्ली, कोइल (अलीगढ़) आदि क्षेत्रों को भी जीत लिया। किंतु कुतुबुद्दीन ऐबक कन्नौज के शासक जयचंद को पराजित नहीं कर सका।